

## साका सरहिंद

- तरुण विजय

गुरु गोबिंद सिंह जी भारतीय इतिहास के ऐसे महान राष्ट्रीय नायक हैं, जिनका जीवन हर भारतीय का माथा गर्व से उन्नत कर देता है। उनके आदर्श पिता गुरु तेगबहादुर जी कश्मीरी हिंदुओं की रक्षा के लिए बलिदान हुए तथा हिंद की चादर कहलाए। इस्लामी कट्टरपंथी औरंगजेब जैसे बादशाहों ने दुनिया के इतिहास में क्रूरता और निर्ममता की नई मिसाल कायम करते हुए भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करने वाले महान सिख गुरुओं और उनके अनुयायियों का बर्बर दमन किया, लेकिन फिर भी सिखों का अप्रतिम प्रतिरोध दबा नहीं।

सिखों ने दिल्ली फतह की। (11 मार्च, 1778) बाबा बघेल सिंह ने लाल किले पर निशान साहब लहराया। मुगल बादशाह को संधि पर विवश किया तथा दिल्ली में गुरुद्वारा शीश गंज साहिब सहित सात गुरुद्वारे बनवाए। सिख गुरुओं ने जो संघर्ष और बलिदान किए उसने हिंदुस्तान बचाया। उनकी अनगिनत बलिदानी गाथाओं में से एक अत्यंत हृदय द्रावक मर्मन्तक एवं भावी पीढ़ी के लिए प्रेरक गाथा यहाँ दे रहा हूँ।

यह दिसंबर 1704 का प्रकरण है। अक्सर यह तारीखें कहीं ना कहीं दूसरी भी बताई जाती हैं, लेकिन इन 300 साल पहले, भारत माता के दो सपूतों जोरावर सिंह और फतेह सिंह ने विश्व के इतिहास में एक ऐसा महान बलिदानी साका रचा जो हर भारतीय को पढ़ना हृदयंगम करना तथा उनके सामने मस्तक झुकाना अनिवार्य होना चाहिए। औरंगजेब के क्रूर शासन में झूठ का ही चलन था। जब मुगल सेना आनंदपुर साहब पर जीत हासिल नहीं कर पा रही थी और किले के भीतर गुरु गोबिंद सिंह जी के पराक्रमी सिखों का बाल बांका नहीं हो पा रहा था; तो औरंगजेब ने कुरान की शपथ खाकर गुरु गोविंद सिंह जी को संदेश भिजवाया कि अगर वे आनंदपुर साहब का किला छोड़ दें, तो फिर उन्हें पूरे हिंदुस्तान में कहीं भी जाने की बेरोकटोक आजादी होगी। गुरु गोबिंद सिंह जी को इस चिट्ठी की मंशा पर शक हुआ लेकिन उनके सहयोगी सिखों ने कहा कि औरंगजेब ने कुरान की कसम खाकर लिखी है इसलिए हम अपना प्रवास जारी रखते हुए किले से बाहर आ जाते हैं। गुरु गोबिंद सिंह श्री में यह नात हिचकते हुए मानी और जैसे ही वे सिख सेना के साथ कहर आए उन पर मुगल सेना टूट पड़ी।

सिरसा नदी के किनारे भयानक युद्ध हुआ। एक एक सिख ने असाधारण वीरता दिखाते हुए, खुद शहीद होने से पहले दस-दस मुगात सैनिकों को मार गिराया। युद्ध की इस अचानक और विश्वासघात चाली घटना में गुरु गोविंद सिंह जी का परिवार एक-दूसरे से अलग हो गया और उनको दो छोटे साहबजादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह अपनी दादी माता गुजरी जी के साथ बीहड़ जंगलों के रास्ते पर चल पड़े। उस बियाबान और भयानक जंगल में चलते चलते उन्हें अनेक विषैले सर्प और बाघ तथा शेर भी मिले, लेकिन वे डरे नहीं और उनको भी इन हिंसक जंतुओं ने कोई क्षति नहीं पहुँचाई। हर क्षण वे वाहेगुरु का

नाम जप रहे थे और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का पाठ कर रहे थे। दादी माता गुजरी अपने दोनों पोतों को शेरनी की तरह संभालते हुए चल रही थी, कि कहीं किसी गाँव में सुरक्षित शरण मिल जाए। उधर गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ उनके दो बड़े साहिबजादे अजीत सिंह और जुझार सिंह, सिरसा नदी पार करके रात के समय रोपड़ नगर में रुके और अगली सुबह चमकौर के किले में पहुँचे।

विधि की विडंबना देखिए भारत की रक्षा और धर्म की ध्वजा की खातिर गुरु गोबिंद सिंह जी का सारा परिवार युद्ध भूमि में तो था ही, वयोवृद्ध माता गुजरी अपने 7 और 9 साल के पोतों को युद्ध और शत्रुओं की भयानक दृष्टि से बचाते हुए शरण ढूँढ रही थी। एक रात शरण मिली कुम्मा नामक भिश्ती (पानी पिलाने वाले) के यहाँ और दूसरी सुबह उनका एक पुराना गंगू नाम का नौकर उन्हें अपने यहाँ आग्रह करके ले गया। सारा दिन चलकर गंगू के घर पहुँचे। सारे रास्ते दोनों छोटे साहबजादे अपनी दादी से पिता गुरु गोबिंद सिंह जी के बारे में और अपने दोनों भाइयों के बारे में पूछते रहे। सामान रखकर दादी और दोनों पोते शाम की प्रार्थना करके सोए, तो रात में ही कुछ खड़का हुआ और माता गुजरी ने देखा कि गंगू उनके सामान से सोने की अशर्फियाँ चुरा कर बाहर जा रहा है। वे चुप रही। सुबह उससे पूछा तो वह चोर की दाढ़ी में तिनके की तरह कुछ ज्यादा ही शोर मचाने लगा और कहने लगा कि एक तो मैंने आपको अपने घर में शरण दी और आप मुझे ही चोर ठहरा रही हैं। वह चिल्लाता हुआ शहर कोतवाल के पास शिकायत करने चला गया और अपने ही एक विश्वासी ने अपने ही देश की रक्षा करने वाले महापुरुषों के खिलाफ विश्वासघात करते हुए एक कलंक अपने माथे पर ले लिया। स्थानीय गाँव खेड़ी के चौधरी ने अपने सिपाही बैठकर मोरिडा के सूबेदार को खबर दी और वे गंगू के घर भारी लाव लश्कर के साथ पहुँचकर अचानक माता गुजरी और दोनों साहिबजादों को गिरफ्तार कर सरहिंद के सूबेदार वजीर खान के पास ले आए।

वजीरखान ने उन्हें सरहिंद के ठंडा बुर्ज (एक मीनार जैसी इमारत) में रखने का हुक्म दिया अगले दिन वजीर खान ने दोनों साहिबजादों को अपने सामने पेश करने का हुक्म दिया। क्या कोई कल्पना कर सकता है कि उस क्षण दोनों साहिबजादों की दादी अर्थात् माता गुजरी के दिल में क्या गुजरा होगा? 7 साल और 9 साल के नन्हें शेर बच्चे दादी के साए से खूंखार और अमानवीय मुगल सूबेदार के सामने जब ले जाए जा रहे थे तो दादी ने बहुत विरोध किया लेकिन, मोरिडा के सूबेदार ने झूठा दिलासा दिया कि वे सिर्फ वजीर खान के सामने बच्चों को एक बार दिखा कर जल्दी ही उन्हें वापस ले आएंगे।

लेकिन बच्चे जो एक बार गए सो गए। जाते हुए दोनों नन्हें साहिबजादों ने अपनी दादी से कहा कि ये तुर्क तो हमेशा हमारे दुश्मन रहे हैं। उनसे कोई बचाव नहीं, इसीलिए हमें सूबेदार के दरबार में जाने दो। दादी ने सिपाहियों से पूछा कि इन दोनों छोटे बच्चों ने तो कोई गुनाह नहीं किया; तुम उन्हें क्यों ले जा रहे हो? उन्होंने अपने पोतों से कहा कि हमेशा याद रखना कि तुम्हारे पिता गुरु गोबिंद सिंह जी हैं और तुम्हारे दादा जी गुरु तेगबहादुर जी थे। चाहे कुछ भी हो जाए उनकी पगड़ी को दाग मत लगाने देना।

सूबेदार ने दोनों साहिबजादों को मानसिक संताप देने के लिए कहा कि तुम्हारे दोनों बड़े भाई अजीत सिंह और जुझार सिंह चमकौर की लड़ाई में मारे गए हैं। अब तुम्हारे सामने अपनी जान बचाने का एक ही तरीका है, कि तुम इस्लाम कबूल कर लो। साहेबजादों ने हिम्मत से कहा कि हमारे पिता दशमेश अभी जिंदा हैं। अकाल पुरख उनकी रक्षा कर रहा है। क्या कभी किसी तूफान में पर्वत डिगा है? क्या कभी कोई अपनी मुट्ठी में सूरज और चंद्रमा को ले सका है? वजीर खान ने उन्हें बहुत लालच दिया और कहा कि अगर वे इस्लाम कबूल कर लेंगे उन्हें बहुत बड़ी जायदाद देगा, बादशाह औरंगजेब उन्हें खिताब देगा। इस पर साहिबजादों ने कहा कि हम मौत से नहीं डरते और अपने पंथ की रक्षा के लिए हम अपनी जान दे देंगे, लेकिन इस्लाम कबूल नहीं करेंगे। हम गुरु गोबिंद सिंह, गुरु तेगबहादुर और गुरु हरगोबिंद सिंह जी के वंशज हैं। नजीर खान ने मलेरकोटला के नवाब से कहा कि गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ लड़ाई में तुम्हारा भाई और भतीजा मारे गए थे अब तुम इन दोनों बच्चों से उनका बदला ले सकते हो। तब नवाब मलेरकोटला ने कहा, कि नहीं यह बच्चे बहुत मासूम हैं। आप इन्हें रिहा कर दीजिए। बदला लेना होगा तो इनके पिता से लेंगे। तब वजीर खान ने खूंखार काजी (गिलजाई कौम) से कहा कि तुम अब इन्हें सजा दो। सूबेदार के काजी ने बार-बार साहिबजादों को इस्लाम कबूल करने के लिए बहलाने की कोशिश की और जब वे शेर की तरह दहाड़ते हुए मना करते गए, तो वजीर खान ने उन्हें जिंदा ही दीवार में चुनवाने का हुक्म दिया। सरहिंद के किले में एक स्थान पर साहिबजादों को जिंदा ही दीवार में चिनने का काम काजी ने किया। जल्लाद एक-एक ईंट रखते थे और पूछते थे कि इस्लाम कबूल है या नहीं? साहेबजादे निडरता से इनकार करते थे। उधर माता गुजरी जी बेहाल थीं। दुनिया में कौन ऐसी मां और दादी होंगी जो अपने नन्हे बच्चों और पोतों को जालिमों के शिकंजे में देखकर एक साँस भी चैन से ले सके। शहर के एक सेठ टोडरमल ने माता गुजरी जी को आकर जब बुरी खबर सुनाने की कोशिश की तो तड़पते हुए माता गुजरी जी ने अपने प्राण त्याग दिए।

टोडरमल वजीर खान के पास गया और उन्हें नन्हे साहिबजादों के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार करने की इजाजत मांगी। वजीर खान ने अपनी नृशंसता दिखाते हुए कहा, उनके अंतिम संस्कार के लिए जितनी जमीन लगेगी उतनी जमीन को ढक सके, उतनी ही सोने की अशर्फियाँ दोगे तो ठीक है। टोडरमल ने अपनी जिंदगी भर की सारी कमाई वजीरखान को दे दी और साहिबजादों के पार्थिव शरीर तथा माता गुजरी जी का भी अंतिम संस्कार किया।

ऐसा लग रहा था मानो धरती फट जाएगी और आसमान टूट पड़ेगा। यह खबर सुनकर गुरु गोविंद सिंह जी पर क्या गुजरी होगी? क्या कोई इसकी कल्पना कर सकता है? उन्होंने औरंगजेब को जफरनामा के जरिए चिट्ठी लिखी जिसमें कहा कि मुझे तुम पर और तुम्हारे सूबेदार पर पानी की एक बूंद के बराबर भी अब यकीन नहीं है जिन्होंने कुरान की कसम खाकर विश्वासघात किया इस विश्वास के लिए तुम्हारा सर्वनाश होना निश्चित है।

साहिबजादों के इस बलिदान को पंजाब में साका सरहिंद अर्थात् सरहिंद की शहादत के नाम से जाना जाता है। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम है कि जिस हिंदू जाति को साहिबजादों के इस बलिदान की कथा

घर-घर सुना कर उनके स्मारक हर शहर में बनाने चाहिए थे। वही कौम आज अपने इतिहास से विस्मृत होकर अपने ही विनाश का लगातार घट रहा दृश्य देख रही है। पूरे देश में ही नहीं पूरे दक्षिण एशिया में भारतीय धरती पर जन्मे पंथों और आस्थाओं पर लगातार आक्रमण बढ़ रहे हैं। साका सरहिंद उन सब के विरुद्ध खड़े होकर भारत और धर्म की रक्षा की अमिट प्रेरणा देता है।